छोटू के तीन दॉत

पता नही ये दो पसली का कूबड़ा कब जवान हुआ और कब बूढा हुआ!
जब से मैने अपनी ऑखें खोली और वो रिटायर हुआ.वो छोटू का छोटू ही रहा।वही घुटने तक बॅधी मटमैली धोती.पैरों मे पुराने टायर टयूबों से बने चप्पल.सूती की चारखानेदार कमीज और सर पर हरे अॅगोक्षी की बॅधी पगड़ी।पता नही सोने के वक्त भी वो अपनी पगड़ी उतारता था या वैसे ही सो जाता था!
सर के बालों से उसे बड़ी नफरत थी।हर शुक्रवार को ही वो पुलिस लाईन जा कर किसी ईट पर बैठ कर अपना सर मुंड़वा आता था।अपने मुॅह मे सामने के बस तीन ही दॉत ले कर जैसे वो पैदा हुआ था और इन्हे लिए वो जवान हुआ।उसके बदन या चेहरे पर तो उम्र से एक झुर्री तक न लाया जा सका पर उससे ये तीनो दॉत ले लिए गए।दॉतों को खोने के बाद भी न तो उसके पोपलेपन मे कोई खास अन्तर आया और न ही उसकी पहचान मे।
स्पोर्टस डिपार्टमिन्ट के सालाने जलसे मे उसे दूसरे मजदूरो मे बॉटने के लिए एक दर्जन कमीजें मिलती थी.जिनमे एक उसकी भी होती थी।अपने लिए चारखाने की एक कमीज छॉट कर बाकी वो दूसरे मजदूरों मे बॉट देता था।
जब दूसरे दिन वो अपनी नई कमीज पहने कैम्पस मे आता था तो बंगाली क्लर्कस उसे देखते ही कहने लग पड़ते थेःकि रे छोटू तुमार उमर को गाड़ी पीछे चोलछे ना की!ःक्यों छोटू!तुम्हारे जीवन की गाड़ी पीछे की तरफ चल रही है क्या!
हर बरस की नई कमीज वाकई उसकी उम्र एक बरस कम कर देती थी।
स्पोर्टस डिपार्टमिन्ट मे वो मज़दूरों का हेड था.गोकि वॉलों मे हवा भरने के अलावे दूसरा कोई काम उसे न आता था।कोर्टस वगैरह दूसरे मजदूर बनाते थे.जो दो चार क्लास पढे हुए थे।माप के फीते को पढना तो दूर रहा.आजीवन वो अपनी तनख्वाह अंगूठा लगा कर लिया।
अपने डिपार्टमिन्ट मे अपनी दो बातों से वो सबका दिल जीते हुए था।नागा वो जानता ही न था और डयूटी शुरू होने से एक घन्टे पहले ही वो डयूटी पर हाजिर हो जाता था।बीमार पड़ने का वो नाम ही नही लेता था।
वो गोविन्दपुर से पहले ढांगी पहाड़ के पीछे बसे एक गॉव बगूला का रहने वाला था और जात का ग्वाला था।थोड़ी बहुत पहाड़ी जमीने भी उसके पास थीं।खेती बाड़ी का काम उसकी पत्नी देखती थी।खेती से बस छ महीने भर का ही अनाज मिल पाता था।इसी वजह से छोटू को नौकरी मे आना पड़ा था।
उसके पास दो गायें भी थीं जो पाव भर दूध सिर्फ एक ही वक्त देती थीं।छोटू इन्हे क्लर्क क्वाटरों मे बेच आता था और खुद काम पर काली चाय पीता था।
काम से बगूला की दूरी यही कोई सात आठ कोस तो रही ही होगी.फिर भी उसकी पत्नी रोजाना दोपहर का खाना उसके लिए ले आती थी।रजिस्ट्रार साहब वाले गेट से एक मटमैली साड़ी मे नंगे पॉव अपने सर पर एक गन्दी अंगोछी मे बॅधे कटोरे लिए छोटू की पत्नी को देख कर कई अपने घड़ी का समय ठीक करने लग पड़ते थे।ठीक बारह बजा होता था।
स्पोर्टस डिपार्टमिन्ट के सामने वाले लॉन के एक कोने मे वो ऊॅकड़ू बैठे छोटू के सामने अपनी पोटली खोल देती थी।छोटू मांड़ भात सुड़कने लग पड़ता था।मांड़ भात मे सनी सब्जी कुछ ज्यादे ही तेज होती थी।नलके के नीचे जूड़ी उसकी अंजूरी जूड़ी ही रहती थी और वो गटागट पानी पीता रहता था।फिर उसकी पत्नी कटोरे को साफ करके उसी गन्दे अंगोछी से पोछ पाछ कर अपने सर पर रख कर घर वापस लौट जाती थी।
अजीब सा साम्य था इन दो प्राणियों के बीच।रूप रंग कद बिल्कुल एक जैसा।बस वो छोटू की तरह कूबड़ी न थी।
वॉलों मे हवा भरने के अलावे और दूसरे दो कामों मे छोटू दिन भर व्यस्त रहता था।
आए दिन ही किसी न किसी के पॉवों मे मोचें आई रहती थी।लंगड़ाते उचकते वो छोटू के पास आ धमकते थे।छोटू उन्हे एक फोल्डिंग चेयर पर बिठा कर झटपट अपने कड़वा तेल की शीशी लाने चल देता था।घन्टों लोग बाग अपनी मालिश करवा के बिना एक अधेला उसके हॉथों पर धरे सरक लेते थे जिसकी उसे कोई परवाह न थी।कई स्टूडेन्टस उसे डाक्टर छोटू भी कहते थे।
उसका दूसरा मनपसन्द काम लोगों के सायकलों के पंचर ठीक करना था।इसके लिए भी उसे एक अधेला न मिलता था।
अपनी इन दो सेवाओं से भले ही वो कुछ न कमाया.परन्तु कैम्पस मे वो सबकी जुबान पर था और सभी उसका आदर करते थे।बिना उसका हाल चाल पूछे कोई आगे बढता ही न था.यहॉ तक कि डायरेक्टर साहब भी नही।छोटू भाव बिभोर हो उठता था।अपने दोनो हॉथ जोड़े अपना सर नवाये वो सबको अपना हाल चाल बताता थाःभालो हजूर के अलावे.शेष उसे बंगाली या खोट्टा बोलने वाले ही समझ पाते थे।
दूसरे मजदूरों की तरह अगर वो चाहता तो कब का काबुलीवालों से कर्जा ले कर एक सायकल खरीद सकता था.पर कर्ज से ही नही.उसे बख्शीशों से भी बड़ी नफरत थी।
वर्षो से वो कैम्पस मे टूटे फेंके सायकलों से अपने काम के पार्टस इकट्ठे किये जा रहा था।किसी का हैन्डल तो किसी का पहिया.किसी की चैन तो किसी का पैडल.पर अभीं भी कुछ न कुछ घट ही रहा था।
हाल चाल के अलावे उससे दूसरा सवाल ये भी किया जाता थाःछोटू तुम्हारी सायकल तैयार हो गई!
निराश वो अपना सर ना मे हिला कर आगे बढ जाता था।
पता नही कितने वर्ष लगे छोटू को अपनी सायकल तैयार करने मे!पर एक दिन उसकी सायकल तैयार हो ही गई।घन्टो वो उसे सरकारी वीम पावडर से मॉज मॉज कर चमकाया.फिर कड़वे तेल से नहलाया.फूल फूलन्तरू से सजाया।सभी उसकी सायकल देख कर दंग रह गए।क्या कुछ नही था उसके सायकल मे!स्टैंड घन्टी कैरियर सब कुछ।बस उसमे एक दोष था।जब वो बन कर तैयार हुई तो उसकी कद किसी ऊॅट से कम न थी।

छोटू उसे डगराता फूटबॉल के मैदान मे ले गया और एक बैंच पर चढ कर उसकी सीट पर जा चढा। बड़ी मुश्किल से उसके पॉव पैडल तक आते थे। गई दोपहरी तक वो सायकल चलाना सीखता रहा। दसों बार वो लुढकनिया खाया फिर उठा. सायकल को एक बैच के पास ले गया और उसकी सीट पर जा बैठा। उसे अपनी एक दॉत भी गॅवानी पड़ी।
फूटबॉल के मैदान से सटें रास्तों पर जो भी गुजरता था. रूक कर ऊॅट की पीठ से लुढकते छोटू को गिरते देखने का मजा जरूर ही लेता था।
घन्टों की तपस्या के बाद छोटू अपनी सायकल सड़क पर ले आया और फूल बगान का एक चक्कर काट कर अपनी सायकल पोस्ट ऑफिस की तरफ मोड़ा और बैरकों से होता कारखाने वाले रास्ते पर आया और एक पुलिया के बगल मे अपनी सायकल खड़ी कर के नीचे उतरा।
इस दिन के बाद से छोटू काम पर सायकल से ही आने जाने लगा।
छोटू का सगा छोटा भाई मोती भी कैम्पस मे माली की नौकरी मे था. पर वो डेलीवेजेस पर था। उसकी नौकरी पक्की न हो पाई थी। उसका इकलौता बेटा नकलू मनि के दोसे की दुकान पर जूठी प्लेटें धोया करता था।
छोटू निःसंतान था। मोती से उसका जमीनो का बॅटवारा तो हो गया था. फिर भी दोनो भाईयों के बीच किसी भी तरह का कोई बैर नही था। मोती को देखते ही छोटू झटपट एक टूटे पुराने हीटर पर तसला चढा कर चाय का पानी रख देता था। दोनो भाई ऊॅकडू एक दूसरे के सामने चनके ग्लासों मे अपनी काली चाय ले कर बैठ जाते थे। बिड़ी पीने की लत दोनो को थी। छोटू अपनी बिड़ियॉ सजा कर एक अल्यूमिनियम के केस मे रखता था। उसके पास एक पेट्रोल वाली लाईटर भी थी. जो बिना तीन बार डॉटें जलती ही न थी। अपने भाई को एक बिड़ी धरा कर छोटू उसकी बिड़ी सुलगाने के बाद ही अपनी बिड़ी सुलगाता था।
उसके भाई की नौकरी परमानेन्ट करवाने का आश्वासन उसे कईयों न दे रखा था जिसकी एवज मे वो अपने क्वार्टरों के पीछे की घिरी जमीन वर्षो से दोनो भाईयों से कूड़वाए जा रहे थे। मोती अभी भी डेलीवेजेस पर ही था। जब तब उसे काम पर से हटा भी दिया जाता था। जमीन जायदाद उसके पास छोटू ही जितनी थी। अपने बेटे नकलू को बड़े बूझे मन से उसे काम पर भेजना पडा था।
नकलू बारह बरस का एक गोल मटोल बच्चा था। दुकान बन्द होने के बाद बजाय अपने गॉव लौटने के वो दुकान मे ही सो जाता था। दुकान का मालिक सुन्दरम भी दुकान मे ही सोता था। पता नही किस वजह से इस चलते चलाते दुकान के मालिक सुन्दरम का अभीं तक अपना घर न बस पाया था!
इसी कॉलेज मे गनेस सिंह नाम का एक कूर्मी ज्यॉलजी डिपार्टमेन्ट मे ड्राफ्टसमैन था और काबुलीवालों की तरह रूपये सूद पर लगाता था. पर उसके सूद की शर्त्ते अलग थीं। वो हर महीने सूद नही तसीलता था. बल्कि कर्जखोरों को एक तय मुहलत देकर उनकी जमीने गिरवी रख लेता था। अब वो भी क्या करता!छ अवारा बेटों के लिए उसे भी तो कुछ न कुछ जोड़ना था। बगूला गॉव की आधी से भी ज्यादे जमीने वो इस तरीके से हड़पे बैठा था। अब इस बार मोती की बारी थी। पॉच सौ रूपये की एवज मे वो मोती की सारी जमीने हड़प बैठा।
छोटू निसहाय अपने भाई की नाशलीला न देख पाया और कंगारू की चाल मे तमतमाया गनेस सिंह के डिपार्टमेन्ट मे जा पहुॅचा और सरेआम सम्मानित गनेस सिंह को अपनी भाषा मे गाली देने लगा।
कूर्मी का मुजफ्फरी खून खौला। छोटू अपने मुॅह की दूसरी दॉत तुड़वा कर वापस स्पोर्टस डिपार्टमेन्ट मे आ गया।
मोती के परिवार मे भूखों मरने की नौबत तो न आई. पर बगूला मे उसके पास सिवाय एक दो कमरे की झुग्गी और दो गायों के अलावे कुछ नही रह गया। उसकी जमीने गनेस सिंह का बड़ा लड़का लक्ष्मी सिंह जोतने लगा।
बगूला के कई ग्वालों को गनेस सिंह की वजह से रिक्सा टानने शहर मे आना पड़ा। कई तो सपरिवार स्टेशन के सामने खड़े हो कर भीख भी मॉगते थे।
जब तब बगूला के ग्वालों से गनेस सिंह के बेटों की झड़पें होती थीं। गनेस सिंह तत्काल किसी कूर्मी थानेदार और दो चार सिपाहियों को लेकर गॉव पहुॅच जाते थे और निर्दोष ग्वालों की धुलवाई करवा देते थे।
बगूला मे एक असंतोष सूलग रहा था।
ठंढ के दिनो मे नकलू को अपने काम से हॉथ धोना पड़ा। उसके हॉथों और पैरों की बिवाईयॉ पक कर घाव बन चलीं थीं. जो गाहकों से न देखा गया। रोजाना सुन्दरम को साला मदरासी सुनने को मिलता था। उसे नकलू को काम पर से हटाना पड़ गया।
मोती परिवार मे हर मास आने वाला पच्चास रूपया तो हॉथ से गया ही. ऊपर से एक प्राणी के मूढी भात का बोझ भी बढा।
तमाम बंगाली क्लर्को से छोटू की गुहार भी निष्काम ही साबित हुई। मोती की नौकरी परमानेन्ट नही हो पा रही थी। इन दोनो भाईयों का खून बंगाली क्लर्क्स आश्वासनों के नाम पर चूसे जा रहे थे।
एक दिन सुबह ही सुबह रजिस्ट्रार साहब के गेट से पहले के खूनी मोड़ पर एक लाश पाई गई. जिसकी शिनाख्त सम्भव न थी। न जाने कितने ट्रकों के पहिये उसे रौंद गए थे और इस लाश का पतरा बना गए थे। इस लाश को उठा कर हटाया नही गया. बल्कि उसे सड़क से खुरचा गया। पॉच दस कदमो तक अलग अलग टायरों के खूनी निशान बने हुए थे।
पुलिस वाले अपने मेश्तर लगवा कर सड़क साफ करवाये। गिरफ्तारी का सवाल पैदा ही कहॉ होता था!खुरची लाश के ढेर को दामोदरपुर मे दो चार लकड़ियों के ढेर पर रख कर फूॅक ताप दिया गया। इस सफाई मे पुलिस वालों को आधा घन्टा भी न लगा। सड़क का बैरियर हटा दिया गया।
ग्यारह बजे के आस पास हेड माली मल्लू छोटू से ये पूछने आया कि आज मोती काम पर क्यों नही आया!ये सुन कर तो छोटू के ऊपर की सॉस ऊपर और नीचे की नीचे रह गई।
दौड़ा भागा वो अपनी सायकल स्टोर रूम से निकाला और बेतहासा फूल बगान वाली पुलिया की ओर दौड़ा। पुलिया पर खड़े हो कर वो सायकल की सीट पर जा बैठा और अपनी सायकल बगूला की ओर दौड़ा दी। पूरे कैम्पस मे ये बात बिजली की तरह फैल गई। सभी को ये विश्वास हो चला था कि रजिस्ट्रार साहब के गेट पर पाई जाने वाली लाश मोती की ही थी. फिर भी सब छोटू के वापस आने का इन्तजार कर रहे थे।

छोटू को बगूला तक न जाना पड़ा। रास्ते मे ही उसे अपनी भवज दिख गई। सर पर एक टूटी टोकरी मे दो चार कॅटीले बैगन धरे उन्हे वो हीरापुर हटिया मे बेचने जा रही थी। उसी से छोटू को पता चला कि मोती तो साढे पॉच बजे ही काम के लिए घर छोड़ दिया था।
अब कौन किसे सान्तवना देता!दोनो रोते कलपते कैम्पस मे वापस आए।
हो सकता है कि मोती काम के बजाय कहीं और चला गया होगा. पर छोटू अपने भाई को अच्छी तरह जानता था। इस संभावना पर उसने कान तक न धरा और मोती की मौत को स्वीकार लिया। उसे दो दिन की छुट्टी दे दी गई।
अपनी भवज को ले कर वो दामोदरपुर गया। वहॉ के डोम से उसे उस जगह का पता आसानी से मिल गया. जहॉ मोती को जलाया गया था। राखों के अलावे अब वहॉ कुछ भी शेष न बचा था।
छुट्टी के बावजूद दूसरे दिन फिर छोटू काम पर हाजिर था। गरीबों के ऑसुओं को सूखने मे ज्यादे वक्त नही लगता है। बस कई दिनो मोती की याद आते ही पोपले मे धॅसी उसके दो काले ओंठ थरथराने लगते थे। फिर उसकी नाक बहने लगती थी।
मोती की जगह तेरह वर्षीय नकलू को चाह कर भी कोई नौकरी नही दी जा सकती थी. पर छोटू को डायरेक्टर साहब ने बुलवा कर व्यक्तिगत आश्वासन दिया थाःजिस दिन नकलू अट्ठारह वर्ष का हो जाए. मेरे पास ले आना। मै अलग से वैकेन्सी निकलवा कर उसे परमानेन्ट नौकरी दूॅगा।
लाख मना करने के बावजूद छोटू अपने सर की पगड़ी उतार कर टेबल के नीचे घूस कर डायरेक्टर साहब के दोनो पैर मजबूती से पकड़ कर उनके जूतों पर अपनी पगड़ी रख दी और बच्चों की तरह फूट फूट कर रोने लगा। डाक्टर दीना नाथ प्रसाद की समझ मे नही आ रहा था कि वो छोटू की कैद से अपने को कैसे छुड़वायें! चुपचाप बैठे वो छोटू के ऑसुओं से अपने जूते धुलवाते रहे और खोट्टा भाषा मे छोटू की आशीषें लेते रहे।
छोटू की सरपरस्ती मे नकलू और उसकी मॉ का निर्वाह होने लगा।
कुछ ज्यादे वक्त न गुजरा था कि एक मनहूस रविवार को बगूला मे गनेस सिंह की छाती मे न जाने किस दिशा से आ कर चार कालिखदार तीर आ घूसे। वो अपने खेतों का मुवायना करने गए थे। मेढ से लुढक कर वो अपने खेत मे लगी धान की फसल पर पीठ के बल जा गिरे। उनके मुॅह के पान का पीक उनके चेहरे और छाती पर पर बिखर गया।
सबसे पहले उनकी लाश उन्ही के बेटे लक्ष्मी ने देखी। अपनी सायकल भगाता वो गोविन्दपुर थाने जा पहुॅचा।
गोविन्दपुर का थानेदार अपने पूरे थाने के साथ बगूला कूच किया। बिना किसी सबूत के छोटू को गिरफ्तार कर लिया गया और उसे हॅथकड़ी पहना कर पूछ ताछ के लिए गोविन्दपुर थाने लाया गया।
छोटू की गिरफतारी का अन्जाम गोविन्दपुर के थानेदार को पता न था।
सोमवार की सुबह ही इन्डियन स्कूल ऑफ माईन्स के डायरेक्टर दीना नाथ प्रसाद और तत्कालीन फिजिकल डायरेक्टर रणजीत सिंह को लिए एक सरकारी गाड़ी अपने बोनट पर तिरंगा फहराते गोविन्दपुर थाने की ओर दौड़ पड़ी. पर इन्हे थोड़ी देर हो गई थी। इनसे पहले वहॉ धनबाद का नक्सली मज़दूर नेता बिपीन महतो पहुॅच कर छोटू को जमानत पर छुड़वा कर थानेदार की मॉ बहन कर रहा था।
सर के अलावे थानेदार के मुॅह से कोई बकार ही न निकल रहा था। अब बिपीन धनबाद मे खदानो मे काम करने वाला मलकट्टा न था. बल्कि इस कन्सटयेुन्सी से एम एल ए था।
छोटू को सरकारी गाड़ी से कैम्पस मे लाया गया और उसे सीधे इन्डियन स्कूल ऑफ माईन्स के सरकारी अस्पताल मे भर्त्ती करवा दिया गया। जब डाक्टर मिर्ज़ा के कहने पर उसने अपनी कमीज खोली तो उसके घायल कूबड़े को देख कर दीना नाथ प्रसाद जैसे आदमी तक से उस थानेदार के लिए बास्टर्ड कहना न रोका गया। छोटू अपने घाव बिपीन महतो को भी दिखा चुका था।
महतो छोटू का केस तो रद्द करवाया ही. थानेदार को भी सस्पेंड करवा कर ही दम लिया।
गनेस सिंह की मौत के बाद उनके किसी बेटे मे इतनी हिम्मत न थी कि वो बगूला की ओर अपना रूख कर सकें। पूरे परिवार को मुजफ्फरपुर वापस लौटना पड़ा। बगूला से खदेड़े ग्वाले अपने जमीनों पर वापस लौटे। नकलू को भी अपने बाप की खोई जमीने वापस मिल गई।
जब वो अट्ठारह वर्ष का हुआ तो उसे फूल बगान मे माली की परमानेन्ट नौकरी भी मिल गई।
समय के साथ छोटू के रिटायरमेन्ट का वक्त आया। उम्र से उसके चेहरे पर एक झुर्री तक न लाई जा सकी पर अपनी गिरफ्तारी मे वो अपना तीसरा और आखिरी दॉत भी गॅवा चुका था।
उसे इन्डियन स्कूल ऑफ माईन्स ने भरे दिल से विदाई के समय चन्दा कर के एक कम्बल. एक बड़ी सी टार्च. दो कमीजे. दो धोती. एक गैस की लालटेन. दर्जनो बन्डलें बिड़ी और पता नही क्या क्या उपहार मे दिया और ऊपर से नकद पॉच सौ रूपया भी। अपने पैर जकड़वाने के डर से इस विदाई पर न दीना नाथ प्रसाद आए और न ही रणजीत सिंह।
छोटू के सन्दर्भ मे एक विशेष बात जो मुझे कहनी थी वो ये है कि हजारों बार उसने धनबाद से कहा कि गनेस सिंह का वही हत्यारा है. पर धनबाद ने इस बात को कभीं नही माना। कोई उसके कहे पर अपनी कान ही नही रखता थाः
ःतुम डींग कोब से हॉकना सीखा रे!ःतुम ओपना जीबोन मे एक माक्खी का बध नही किया। इन्सान का होत्या कि रोकम कोरेगा रे छोटू!

प्रमोद कुमार सिंह